# शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

## हिन्दी विभाग

(अध्ययन मंडल हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग एवं प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के सूचना आदेश दिनांक 07 मई 2025 के अनुसार सत्र–2025–26 के लिए **स्नातक हिंदी भाषा और साहित्य तथा ऑनर्स (प्रतिष्ठा)** हिंदी का अनुमोदित पाठ्यक्रम)

## स्नातक हिन्दी

(सत्र–2025–26)

**(FYUGP (CBCS AND LOCf Course)**

सेमेस्टर प्रणाली

(सेमेस्टर 1, 3, 5 और 7)

डॉ. शंकर मुनि राय
विभागाध्यक्ष–हिंदी

डॉ. सुचित्रा गुप्ता
प्राचार्य

# FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

## DEPARTMENT OF HINDI

## COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Researc | Semester-I | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | AEC-03 |
| 2 | Course Title | हिंदी भाषा–1 |
| 3 | Course Type | Ability Enhancement Course |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | 1 विद्यार्थीहिंदीभाषा एवंव्याकरणसंबंधीज्ञान से समृद्ध होंगे।<br>2 भाषाज्ञान के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवंभावनात्मक एकता के महत्वको समझने की क्षमताविकसितहोसकेगी।<br>3 मुहावरे एवंलोकोक्तियों का महत्व समझसकेंगे।<br>4 व्यंग्य, निबंध एवंकविताविधा से परिचितहोंगे।<br>5 निबंध लेखन एवंअपठितगद्यांश के माध्यम से विद्यार्थियों का बौद्धिक विकासहोसकेगा। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 2 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 50 | Minimum passing Marks : 20 |

| Part-B: content of the course |
|---|
| Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 30 periods (30 Hours |

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | **रचनाएं**<br>भारत वंदना– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (कविता)<br>भोलाराम का जीव–हरिशंकर परसाई ( व्यंग्य)<br>चोरी और प्रायश्चित–महात्मा गांधी (निबंध ) | 08 |
| II | **हिंदी व्याकरण एवं शब्द रचना**<br>उपसर्ग, प्रत्यय,संधि,समास<br>पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द,अनेकार्थी शब्द,समश्रुत शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द। | 7 |
| III | **हिंदी व्याकरण एवं रचना पक्ष**<br>मुहावरे एवं लोकोक्तियां<br>पारिभाषिक शब्दावली एवं हिंदी में पदनाम, शब्द शुद्धि,वाक्य शुद्धि | 8 |
| IV | **रचनात्मक लेखन**<br>निबंध लेखन<br>अपठित गद्यांश<br>(नोट विद्यार्थी को किसी एक विषय पर निबंध व प्रदत्त गद्यांश का शीर्षक तथा सारांश लिखना होगा) | 7 |

**संदर्भ ग्रंथ:**

1. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना– डॉ वासुदेव नंदन
2. हिंदी भाषा और व्यवहार– डॉ गंगा चरण त्रिपाठी
3. हिंदी व्याकरण माला– डॉ के आर गहिया
4. हिंदी व्याकरण– कामता प्रसाद गुरू

**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

1. डॉ. शंकर मुनि राय –
2. डॉ. बी. एन. जागृत – 16.5.25
3. डॉ. [illegible] –
4. डॉ. प्रवीण कुमार साहू –
5. डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहू
6. डॉ. गायत्री साहू –
7. डॉ. नीलम तिवारी
8. डॉ. लोकेश कुमार
9. कौशिक Kaushik

FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Researc | Semester-I | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNGE-01 |
| 2 | Course Title | हिंदी साहित्य का इतिहास ( आदिकाल से रीतिकाल तक) |
| 3 | Course Type | GE |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | 1 विद्यार्थी साहित्येतिहास ,काल विभाजन एवं नामकरण संबंधी ज्ञा अवगत हो सकेंगें।<br>2 युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृतियों के आधार परस और समाज के अंतर्संबंधो<br>को समझपाने में सक्षम हो सकेंगें।<br>3 युगीन सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में व दृष्टिकोण की समझ का<br>विकास हो सकेगा।<br>4 आदिकाल से रीतिकाल तक के संपूर्ण रचनाकारों की रचनाओं उसके विविध विषयों पर<br>विश्लेषणात्मक विचारशीलता का विकास हो सकेगा।<br>5 हिंदी गद्य के आर्विभाव के प्रधान कारणों एवं परिस्थितियों को सकेंगे। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

| Part-B: content of the course |
|---|
| Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours |

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | हिंदी साहित्य का इतिहास, व कालविभाजन–<br>अ. आदिकालः हिंदीसाहित्य के इतिहासलेखन की परंपरा,समस्या<br>ब. हिंदीसाहित्य के इतिहास का कालविभाजन व नामकरण | 15 |
| II | आदिकाल–<br>अ. आदिकालः सामान्य परिचय प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि ,<br>सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य<br>ब. रासो काव्य, लौकिक साहित्य, जैन साहित्य | 15 |
| III | भक्तिकाल–<br>अ. भक्तिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि।<br>निर्गुण भक्तिधारा ( प्रेममार्गी, ज्ञानमार्गी) | 15 |

| | | |
|---|---|---|
| | ब. सगुण भक्तिधारा (रामकाव्य, कृष्णकाव्य) | |
| IV | रीतिकाल–<br>अ. रीतिकालः सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि<br>ब. रीतिबद्ध ,रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्यधारा | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन ,इलाहाबाद
2. हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल–आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
4. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां –डॉ शिवकुमार
5. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– रामकुमार वर्मा
6. हिंदी साहित्य की भूमिका– आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
7- epgpathshala
8- https://www.hindiwi.org


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

# FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

## DEPARTMENT OF HINDI

## COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Researc | Semester-I | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNSC-01 |
| 2 | Course Title | हिंदी साहित्य का इतिहास ( आदिकाल से रीतिकाल तक) |
| 3 | Course Type | DSC |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | 1 विद्यार्थी साहित्येतिहास ,कालविभाजन एवं नामकरण संबंधी ज्ञान से अवगत हो सकेंगें।<br>2 युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृतियों के आधार पर साहित्य और समाज के अंतर्संबंधो को समझ पाने मे सक्षम हो सकेंगें।<br>3 युगीन सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में व्यापक दृष्टिकोण की समझ का विकास हो सकेगा।<br>4 आदिकाल से रीतिकाल तक के संपूर्ण रचनाकारों की रचनाओं और उसके विविध विषयों पर विश्लेषणात्मक विचार शीलता का विकास हो सकेगा।<br>5 हिंदी गद्य के आर्विभाव के प्रधान कारणों एवं परिस्थितियों को समझ सकेंगे। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

| Part-B: content of the course |
|---|
| Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours |

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | हिंदी साहित्य का इतिहास, व काल विभाजन–<br>अ. आदिकालः हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, समस्या<br>ब. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन व नामकरण | 15 |
| II | आदिकाल–<br>अ. आदिकालः सामान्य परिचय प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य<br>ब. रासो काव्य, लौकिक साहित्य, जैन साहित्य | 15 |
| III | भक्तिकाल–<br>अ. भक्तिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि।<br>भक्तिधारा ( प्रेममार्गी, ज्ञानमार्गी) | 15 |

| | | |
|---|---|---|
| | ब. सगुण भक्तिधारा (रामकाव्य, कृष्णकाव्य) | |
| IV | रीतिकाल–<br>अ. रीतिकालः सामान्य परिचय, प्रमुख प्रवृत्तियां व कवि<br>ब. रीतिबद्ध ,रीतिसिद्ध एवं रीति मुक्त काव्यधारा | 15 |

संदर्भ ग्रंथ–


1 हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन ,इलाहाबाद

2हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

3 हिंदी साहित्य का आदिकाल–आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

4हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां –डॉ शिवकुमार

5 हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– रामकुमार वर्मा

6 हिंदी साहित्य की भूमिका– आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

7 epgpathshala

8 https://www.hindiwi.org


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Researc | Semester-III | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNSC-03 |
| 2 | Course Title | मध्यकालीन हिंदी काव्य |
| 3 | Course Type | DSC |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | 1 विद्यार्थी तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत होंगे।<br>2 युगीनमूर्धन्य कवि–कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास घनानंद के काव्य के माध्यम से साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों को समझाने की क्षमता का विकास हो सकेगा।<br>3 विद्यार्थी गौरवशाली मध्यकाल की काव्य प्रवृत्तियों से परिचित होंगे।<br>4 विद्यार्थियों में मध्यकालीन काव्य के प्रति आलोचनात्मक एवं व्यावहारिक दृष्टि की समझ विकसित हो सकेगी।<br>5 छात्रों मे मानवतावादी मानवीय मूल्यों का विकास होगा। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

| Part-B: content of the course |
|---|
| Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours) |

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | कबीरदास<br>कबीर–कांतिकुमार जैन– प्रारंभिक 20 सांखियां | 15 |
| II | सूरदास<br>सूर–भ्रमरगीत सार–सं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल– प्रारंभिक 20 | 15 |
| III | तुलसीदास<br>तुलसीदास–रामचरित मानस( सुंदरकाण्ड) प्रारंभिक दोहे–चौपाई | 15 |
| IV | घनानंद<br>घनानंद–सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, प्रारंभिक 15 छंद | 15 |

संदर्भ ग्रंथ–

1 प्राचीन हिंदी काव्य–स.डॉ सत्यभामा आडिल

2 कबीर साहित्यिक परख–परशुराम चतुर्वेदी

3 सूरदास–मैनेजर पाण्डेय

4 तुलसीदास औरउनका युगसंदर्भ–डॉ भागीरथ मिश्र

5 बिहारी–डॉ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

6 घनानंद ग्रंथावली–डॉ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

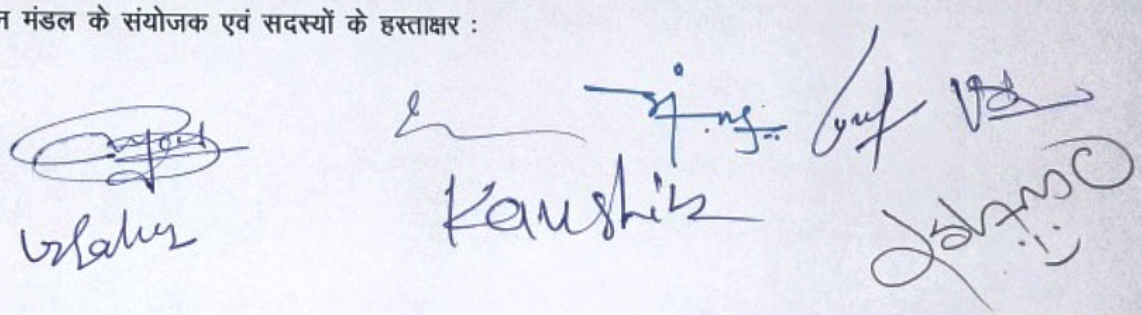

# FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

## DEPARTMENT OF HINDI

## COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Research | Semester-III | Session 25-26 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNSE-01 | |
| 2 | Course Title | तुलसीदास | |
| 3 | Course Type | **DSE** | |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement | |
| 5 | Course Learning Outsco (CLO) | 1 विद्यार्थी महाकवि तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे ।<br>2 हिंदी की भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियों से परिचित होंगें।<br>3 विद्याथी तुलसी साहित्य की व्यापक प्रासंगिकता से अवगत होंगे।<br>4 विद्यार्थी युगीन सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों से अवगत होंगे। | |
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours)

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | तुलसीदास का साहित्यिक परिचय<br>तुलसीदास का काव्य वैशिष्ट्य | 15 |
| II | रामचरितमानस–अयोध्याकांड दोहा– 1 से 15 तक | 15 |
| III | कवितावली–बालकाण्ड–96, 97 ,106, 108, 129<br>दोहावली– 252, 260, 358, 467, 507 | 15 |
| IV | विनय पत्रिका– 1, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 78, 79 | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. गोस्वामी तुलसीदास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. तुलसी और उनका काव्य–श्रीराम प्रसाद मिश्र
3. विनय पत्रिका–गीता प्रेस, गोरखपुर
4. श्रीरामचरित मानस–गीता प्रेस, गोरखपुर
5. कवितावली– गीता प्रेस, गोरखपुर
6. तुलसी दोहावली –प्रभात प्रकाशन, दिल्ली


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
हिंदी विभाग
चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (CBCS And LOCF) inkरूप
विषय : हिन्दी साहित्य (Disciplinary Specific Course)

| | |
|---|---|
| सत्र : 2025–26 | स्नातक |
| सेमेस्टर–5 | विषय : हिंदी साहित्य–5 |
| पाठ्यक्रम का स्वरूप : (DSC-5)<br>मूल पाठ्यक्रम हिंदी | विषय कोड : |
| पाठ्यक्रम का नाम : छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य | |
| केडिट : 04 | व्याख्यान : 60 |
| अधिकतम अंक : 100 (80+20) | न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत |

| | |
|---|---|
| **Program outcomes :**<br>**(पाठ्यक्रम प्रतिफल)** | • छत्तीसगढ़ की राजभाषा छत्तीसगढ़ी होने के कारण जरूरी है कि स्थानीय पाठ्यक्रम में इसकी उपयोगिता सिद्व की जाए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए जनपदीय भाषा छत्तीसगढ़ी को पाठ्यक्रम का अंग बनाया गया है। अतः इस भाषा का और इसमे रचित साहित्य और इसके ऐतिहासिक विकास के साथ ही इसके प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनुशीलन करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य होगा। |
| **(Program specific outcomes (Pso) :**<br>(पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल) | • यह प्रश्नपत्र छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास एवं विकास की पृष्ठभूमि को रेखांकित करता है।<br>• इसमें छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्य का इतिहास प्रमुख पाठ्य विषय हैं।<br>• इसमें छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन किया जाएगा।<br>• इसके अध्ययन से विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य के प्रति रूचि व बोध विकसित होगा। |

| इकाई | व्याख्यान | पाठ्य विषय |
|---|---|---|
| 1 | 15 | छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य :<br>(क) लोक साहित्य का अर्थ, स्वरुप, विशेषताएं एवं प्रकार।<br>(ख) लोकगाथा, लोककथा, लोकगीतों का परिचय<br>(ग) मुहावरे, लोकोक्तियां एवं पहेलियो की विशेषताएं एवं प्रकार |
| 2 | 15 | 1. धरमदास के तीन पद : (क) गुरु पइयां लागवं नाम लखा दीजो हों (ख) नैनन आगे ख्याल घनेरा (ग) भजन करो भाई रे अइसन तन पायके।<br>2. सीख–सीख के गोठ (निबंध)–डॉ. सत्यभामा आड़िल<br>3. मोर संग चलव रे–लक्षमण मस्तुरिया |
| 3 | 15 | 4. डॉ. विनय पाठक की कविताएं– तंय उठथस सुरूज उथे, एक |

| | | |
|---|---|---|
| | | किसिम के नियाव, (अकादसी और अनचिन्हार पुस्तक से उधृत)<br>5. मुकुंद कौशल : (छत्तीसगढ़ गजल) "छै बित्ता के मनखे देखों.....से– मछरी मन लाख लेथे" तक (पुस्तक 'छत्तीसगढ़ गजल' के पृष्ठ 17 से उधृत) |
| 4 | 15 | **दृतपाठ के रचनाकर–** (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)<br>1. संत घासीदास 2. सुंदरलाल शर्मा 3. कपिलनाथ कश्यप, 4. रामचंद्र देशमुख (रंगकर्मी) 5. सरला शर्मा |

संदर्भग्रंथ–


1. छत्तीसगढ़ी कहावतें, मुहावरे एवं पहेलियां– संपादक–थानसिंह वर्मा एवं डॉ शंकर मुनि राय (शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय प्रकाशन)
2. जनपदीय भाषा–साहित्य : डॉ. सत्यभामा आडिल (छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी)


**पाठ्यक्रम समिति के सदस्य :**

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
हिंदी विभाग

चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम **(CBCS And LOCF)** प्रारूप
विषय : **Discpline Specific Elective Course (DSE)-4**

| | |
|---|---|
| सत्र : 2025–26 | स्नातक |
| सेमेस्टर–5 | विषय : आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य– 2 |
| पाठ्यक्रम का स्वरूप : विषय : आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य | विषय कोड : |
| केडिट : 04 | व्याख्यान : 60 |
| अधिकतम अंक : 100 (80 +20) | न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत |

| | |
|---|---|
| शीर्षक | पाठ्य विषय : आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य |
| | |
| **Program outcomes :** (पाठ्यक्रम प्रतिफल) | हिंदी के लगभग डेढ हजार वर्षो के साहित्यिक इतिहास में जो कमशः बदलाव होते आये हैं, उसी के आधार पर हमारी शिक्षा नीति के आधार बनते–बिगड़ते और सवंर्द्धित होते रहे है। इसलिए विद्यार्थियों को इन सबकी जानकारी देना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।<br><br>आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, का सामान्य अध्ययन विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। उनसे यह अपेक्षा की जा सकती है कि उन्हें हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी किस स्तर तक है। इस कम में उससे यह भी अपेक्षित है कि उन्हें अपनी साहित्यिक दुनिया की प्रवृत्तियों की जानकारी हो। |
| **(Program specific outcomes (Psos) :** (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल) | • इसके अंतर्गत हिंदी गद्य साहित्य के अंतर्गत नाटक एवं नाटककार, एकांकी और एकांकीकार, कहानी एवं कहानीकार के बारे में जानकारी देते हुए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और स्वरूप से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाएगा।<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता मिलेगी।<br>• हिंदी के प्रमुख नाटककार, एकांकीकार एवं कहानीकार तथा उनकी कुछ रचनाओं के बारे में जो अध्ययन सामग्री तैयार की गई है, उससे विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि में भी वृद्धि होगी। |

| इकाई | व्याख्यान | पाठ्य विषय |
|---|---|---|
| 1 | 15 | • आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, का सामान्य परिचय |
| 2 | 15 | • नाटक : व्याख्या एवं समीक्षा<br>क. आगरा बाजार–हबीब तनवीर<br>ख. अंधों का हाथी–शरद जोशी |
| 3 | 15 | • कहानी : कहानीकारों की शैली, व्याख्या एवं समीक्षा |

| | | |
|---|---|---|
| | | क. बुढ़ी काकी– प्रेमचंद<br>ख. पंचलाइट–फंणीश्वरनाथ 'रेणु' |
| 4 | 15 | • एकांकी : एकांकीकारों की शैली, व्याख्या एवं समीक्षा<br>क. पृथ्वीराज की आंखें–रामकुमार वर्मा<br>ख. कोणार्क–जगदीशचंद्र माथुर |

**सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :**


1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचंद्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– नंददुलारे वाजपेयी
3. हिन्दी का गद्य साहित्य रामचंद्र तिवारी
4. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास एवं विश्लेषण – विजय मोहन सिंह


**पाठ्यकम समिति के सदस्य :**

# शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
## हिंदी विभाग
## चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (CBCS And LOCF) inkरूप
## विषय : Discpline Specific Elective Course (DSE)-3

| | |
|---|---|
| सत्र : 2025–26 | स्नातक |
| सेमेस्टर–5 | विषय : छायावादोत्तर हिंदी साहित्य (काव्य)–1 |
| पाठ्यक्रम का स्वरूप : विषय : छायावादोत्तर हिंदी साहित्य (काव्य)–1 | विषय कोड : |
| केडिट : 04 | व्याख्यान : 60 |
| अधिकतम अंक : 100 (80 +20) | न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत |

| | |
|---|---|
| शीर्षक | पाठ्य विषय : छायावादोत्तर हिंदी साहित्य (काव्य)–1 |
| | |
| **Program outcomes :** (पाठ्यक्रम प्रतिफल) | • छायावादोत्तर काव्य के अंतर्गत प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के नामकरण, प्रवृत्तियां एवं रचनागत विशेषताओं के अध्ययन को केंद्रित यह पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में गजानन माधव मुक्तिबोध, रामधारी सिंह 'दिनकर,, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नागार्जुन, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर, धर्मवीर भारती, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल,' श्रीकांत वर्मा जैसे कवियों कें व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विद्यार्थियों को जानकारी देना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। |
| **(Program specific outcomes (Psos) :** (पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य प्रतिफल) | • इसके अंतर्गत हिंदी साहित्य की प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के नामकरण, प्रवृत्तियां एवं रचनागत विशेषताओं की जानकारी देते हुए कालानुसार उसके स्वरूप से विद्याथियों को अवगत कराया जाएगा।<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्याथियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता मिलेगी।<br>• प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता प्रमुख रचनाकारों के बारे में जो अध्ययन सामग्री तैयार की गई है, उससे विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि में भी वृद्धि होगी। |

| इकाई | व्याख्यान | पाठ्य विषय |
|---|---|---|
| 1 | 15 | • छायावादोत्तर काव्य : सामान्य परिचय<br>• प्रगतिवाद : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवियो की रचनागत विशेषताएं (गजानन माधव मुक्तिबोध, रामधारी सिंह 'दिनकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नागार्जुन) |
| 2 | 15 | • प्रयोगवाद : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवियों की रचनागत विशेषताएं सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर |
| 3 | 15 | • नई कविता : : नामकरण, प्रवृत्तियां एवं रचनागत विशेषताएं |

| | | |
|---|---|---|
| | | • प्रमुख कवि : धर्मवीर भारती, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल,' श्रीकांत वर्मा कुंवर नारायण |
| 4 | 15 | • प्रमुख कविताओं की समीक्षा<br>• भिक्षुक–निराला, विज्ञान और मनुष्य–दिनकर, अकाल और उसके बाद–नागार्जुन, हो गई है पीर पर्वत.....–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना |

**सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :**


1. आधुनिक हिंदी साहितय का इतिहास– बच्चन सिंह
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचंद्र शुक्ल
3. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– नंददुलारे वाजपेयी
4. हिन्दी का गद्य साहित्य रामचंद्र तिवारी
5. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास एवं विश्लेषण – विजय मोहन सिंह


**पाठ्यक्रम समिति के सदस्य :**

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
हिंदी विभाग

## चारवर्षीय स्नातक पाठ्यकम (CBCS And LOCF) प्रारूप

**विषय : बौद्धिक क्षमता विकास (Skill Enhancement Course)**

| | |
|---|---|
| सत्र : 2025–26 | स्नातक |
| सेमेस्टर–5 | विषय : छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास –1 |
| पाठ्यकम का स्वरूप : छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास–1 | विषय कोड : |
| केडिट : **02** | व्याख्यान : **30** |
| अधिकतम अंक : 50 (**ESE40 +IA10**) | न्यूनतम उत्तीर्णांक : 40 प्रतिशत |

| शीर्षक | | पाठ्य विषय : छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास–1 |
|---|---|---|
| **Program outcomes :** (पाठ्यकम प्रतिफल) | | छत्तीसगढ़ की राजभाषा छत्तीसगढ़ी होने के कारण इसके साहित्यिक इतिहास और रचना धर्म से विद्यार्थियों को परिचित कराना इस पाठ्यकम का उद्देश्य है। छत्तीसगढ़ी के साहित्य लेखन में जिन महत्वपूर्ण रचनाकारों की सूची बनती है, उनकी कुछ प्रमुख कृतियों को भी अध्ययन सामग्री के रूप में यहां शामिल किया गया है। |
| **(Program specific outcomes (Psos) :** (पाठ्यकम वैशिष्ट्य प्रतिफल) | | • इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ी व्साहित्य के कुछ प्रमुख रचनाकारों की कृतियों को पाठ्य विषय के रूप में शामिल किया गया है।<br>• प्रस्तुत पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को अपने प्रदेश की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता मिलेगी।<br>• इस प्रश्नपत्र में छत्तीसगढ़ी साहित्य से संबधित जो अध्ययन सामग्री तैयार की गई है, उससे विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि में भी वृद्धि होगी। |
| इकाई | व्याख्यान | पाठ्य विषय |
| 1 | 10 | • छत्तीसगढ़ी साहित्य : ऐतिहासिक पृष्ठभमि, स्वरूप एवं विकासकम<br>• आदिकालीन काव्य गाथा युगः प्रमुख गाथा साहित्य का परिचय<br>• प्रेम प्रधान गाथाएं, धार्मिक और पौराणिक गाथाएं |
| 2 | 10 | • मध्यकालीन काव्य गाथा युग : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय<br>• वीरगाथाएं : धार्मिक और सामाजिक गीत |
| 3 | 10 | • गाथा काव्य की समीक्षा : पंडवानी एवं भरथरी की समीक्षा |

**सहायक ग्रंथ / पुस्तकें :**

1. **छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्भव और विकास –नरेन्द्रदेव वर्मा**
2. छत्तीसगढ़ी भाषा ओर साहित्य– डॉ. सत्यभामा आड़िल

**पाठ्यकम समिति के सदस्य :**

## FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

## DEPARTMENT OF HINDI

## COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors Honorse with Research | Semester-VII | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNSC-07 |
| 2 | Course Title | कथेतर गद्य ( नाटक, उपन्यास, एकांकी ,निबंध,) |
| 3 | Course Type | DSC |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | 1. विद्यार्थी हिंदी निबंध, नाटक एवं एकांकी विधाओं से परिचित हो सकेगें।<br>2. निबंधकार, नाटककार, एकांकीकार एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगं।<br>3. विद्यार्थी निबंध, नाटक एवं एकांकी के माध्यम से सामाजिक समस्याओं से परिचित हो उनके समाधान हेतु प्रेरित होंगे।<br>4. विद्यार्थियो मे लेखकों की लेखन शैली का परिचय एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास हो सकेगा।<br>5 विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता का विकास हो सकेगा। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : | Minimum passing Marks : 4 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours)

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | नाटक– अंधेर नगरी–भारतेंदु हरिश्चंद्र | 15 |
| II | उपन्यास–दीवार में एक खिड़की रहती थी – विनोद कुमार शुक्ल | 15 |
| III | एकांकी – 1 औरंगजेब की आखिरी रात– रामकुमार वर्मा<br>2 एक दिन : लक्ष्मीनारायण मिश्र | 15 |
| IV | निबंध 1 क्रोध – आचार्य रामचंद्र शुक्क<br>2 बसंत आ गया है– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. हिंदी नाटक उद्भव और विकास– दशरथ ओझा
2. हिंदी एकांकी: उद्भव और विकास– साहित्य प्रकाशन
3. हिंदी निबंध और निबंधकार– विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. गद्य विन्यास और विकास– लोक भारती प्रकाशन


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | |
|---|---|---|
| Program : Bachelor in Arts Honors with Research | Semester-VII | Session 25-26 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Course Code | HNGE 03 |
| 2 | Course Title | छत्तीसगढ़ी व्याकरण |
| 3 | Course Type | GE |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement |
| 5 | Course Learning Outscom (CLO) | छत्तीसगढ़ी राजभाषा होने के कारण इसकी व्याकरणिक कोटियों का व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थियों को कराना आवश्यक है। छत्तीसगढ़ी को मौखिक परंपरा से उठाकर साहित्यिक स्तर पर परखने के लिए इसका व्याकरण समझना बहुत जरूरी है।<br>• इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ी व्याकरण के आधारभूत अंशों को पाठ्य विषय के रूप में शामिल किया गया है।<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता मिलेगी।<br>• इस प्रश्नपत्र में छत्तीसगढ़ी व्याकरण से संबधित जो अध्ययन सामग्री तैयार की गई है, उससे विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि में भी वृद्धि होगी। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours)

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | • छत्तीसगढ़ी भाषा : सामान्य परिचय–नामकरण, प्रकार एवं भौगोलिक विस्तार<br>• छत्तीसगढ़ी बोलियों का वर्गीकरण : प्रकार एवं क्षेत्र विस्तार<br>• वर्णमाला, लिंग, वचन एवं कारक | 15 |
| II | • छत्तीसगढ़ी : विविध रूप–मानक एवं अमानक छत्तीसगढ़ी<br>• संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण किया एवं किया विशेषण<br>• छत्तीसगढ़ी शब्द रचना–विधि : उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास | 15 |
| III | • छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां : अर्थ, स्वरूव एवं विशेषताएं<br>• हाना (कहावत) और मुहावरे : अर्थ एवं प्रयोग<br>• जनउला : अर्थ एवं प्रयोग | 15 |

| | | |
|---|---|---|
| IV | • व्यावहारिक छत्तीसगढ़ी : विलोम शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द<br>• छत्तीसगढ़ी लोक व्यावहारी शब्द : फल एवं सब्जियों के नाम<br>• पशु–पक्षियों के नाम, शरीरांग एवं घर गृहस्थी के शब्द | 15 |

**संदर्भ ग्रंथ :**


1. छत्तीसगढ़ी का संपूर्ण व्याकरण –डॉ. विनय कुमार पाठक एवं विनोद कुमार वर्मा, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, रायपुर
2. छत्तीसगढ़ी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन– डॉ. शंकर शेष, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी
3. छत्तीसगढ़ी बोली का व्याकरण–हीरालाल काव्योपाध्याय, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी
4. छत्तीसगढ़ी भाषा का वर्तमान स्वरूप–चंद्रकुमार चंद्राकर, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी
5. छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियां–डॉ. चित्तरंजन कर
6. छत्तीसगढ़ी शब्दकोश–डॉ पालेश्वर प्रसाद शर्मा


**पाठ्यक्रम समिति के सदस्य :**

# FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

## DEPARTMENT OF HINDI

## COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | | |
|---|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Researc | | Semester-VII | Session 25-26 |
| 1 | Course Code | HNSE-05 | |
| 2 | Course Title | भारतीय काव्य शास्त्र एवं साहित्यालोचन | |
| 3 | Course Type | **DSE** | |
| 4 | Pre Reqisite (If any | AS per requirement | |
| 5 | Course Learning Outsc (CLO) | 1 विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के स्वरूप को समझने में सक्षम हो सकेंगे।<br>2 विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के विकास क्रम से परिचित हो सकेंगे।<br>3 हिंदी आचार्यों के काव्यशास्त्रीय चिंतन से परिचित होंगे।<br>4 आधुनिक हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों से अवगत ळो सकेंगे।<br>5 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों को समझने की क्षमता का विकास हो सकेगा। | |
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | **काव्य की परिभाषा और स्वरूप** : काव्य लक्षण, काव्य हेतु , काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार रस सिद्धांत, रस का स्वरूप निष्पत्ति, साधारणी करण, रस के अंग | 15 |
| II | अलंकार सिद्धांत, ,रीति सिद्धांत , वकोक्ति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत | 15 |
| III | हिंदी आचार्यों का काव्य शास्त्रीय चिंतन– केशव, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा | 15 |
| IV | आधुनिक हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवुत्तियां : शास्त्रीय, ऐतिहासिक, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय व व्यावहारिक समीक्षा | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. भारतीय काव्यशास्त्रीय –डॉ.उदयभान सिंह
2. रस सिद्धांत–डॉ नगेन्द्र
3. समीक्षा के प्रतिमान–डॉ निर्मला जैन
4. भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना–डॉ. रामचंद्र तिवारी
5. प्लेटो का काव्य सिद्धांत– निर्मला जैन


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | | |
|---|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Research | | Semester-VII | Session 25-26 |
| 1 | Course Code | HNSE-06 | |
| 2 | Course Title | कार्यालयीन व व्यावहारिक हिंदी | |
| 3 | Course Type | **DSE** | |
| 4 | Pre Reqisite (If any) | AS per requirement | |
| 5 | Course Learning Outsco (CLO) | 1 विद्यार्थी कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप को समझने में सक्षम हो सकेंगे ।<br>2 कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी के विविध पक्षो से परिचित हो सकेंगे।<br>3 जनसंचार माध्यमों में हिंदी के प्रयोगो से अवगत होंगे।<br>4 कम्प्यूटर में हिंदी के अनुप्रयोग में सक्षम होंगे।<br>5 विद्यार्थियों में कार्यालयीन एवं व्याहारिक हिंदी के प्रति अभिरूचि का विकास हो सकेगा। | |
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | कार्यालयीन हिंदी : कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप एवं उद्देश्य<br>हिंदी के प्रयोजनमूलक संदर्भ<br>कार्यालयीन, साहित्यिक, वाणिज्यिक ,वैज्ञानिक, तकनीकी, जनसंचार माध्यमों में हिंदी | 15 |
| II | कार्यालयीन पत्राचार : प्रारूपण–अर्थ, पद्धति<br>शासकीय एवं अर्द्धशासकीय पत्र, कार्यालयीन आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, ज्ञापन, विज्ञापन, प्रेस विज्ञप्ति, टिप्पण | 15 |
| III | कार्यालयीन हिंदी में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत<br>कार्यालयीन पारिभाषिक शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली एवं पदनाम | 15 |
| IV | कम्प्यूटर में हिंदी का अनुप्रयोग : कम्प्यूटर और हिंदी का अन्तर्संबंध<br>हिंदी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर एवं विभिन्न की–बोर्ड<br>देवनागरी लिपि के विभिन्न फॉण्ट्स<br>हिंदी से संबंधित वेबसाईट,ई–पत्र–पत्रिकाएं | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. हिंदी भाषा और संस्कृति– मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी
2. कार्यालयीन हिंदी की प्रकृति–चंद्रपाल शर्मा
3. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी– डॉ संजीव कुमार जैन
4. व्यावहारिक हिंदी – डॉ प्रकाशचंद्र सेन
5. सरल व्यावहारिक हिंदी– डॉ.शंकर मुनि राय


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**

:

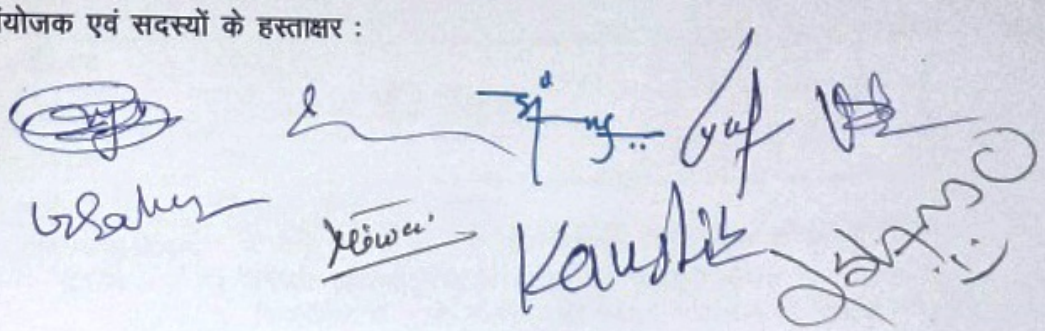

FOUR YEAR UNDERGRAGUATE PROGRAM-25-26

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM

| PART A: INTRODUCTION | | | |
|---|---|---|---|
| Program : Bachelor in ArtsHonors/Honorse with Research | | Semester-VII | Session 25-26 |
| 1 | Course Code | HNSE-07 | |
| 2 | Course Title | छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य | |
| 3 | Course Type | **DSE** | |
| 4 | Pre Reqisite (If any | AS per requirement | |
| 5 | Course Learning Outsc (CLO) | 1 विद्यार्थी लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति से परिचित हो सकेंगे ।<br>2 विद्यार्थी लोकसाहित्य के स्वरूप से अवगत होंगे।<br>3 विद्यार्थियों में लोक संस्कृति की समझ विकसित हो सकेगी।<br>4 छत्तीसगढ़ के लोकसाहित्य से जुड़ाव हो सकेगा।<br>5 विद्यार्थियों में लोकसाहित्य के सृजन की रूचि जागृत हो सकेगी | |
| 6 | Credit Value | 4 Credits | 01 Credit =15 Hours-learning & objervation |
| 7 | Total marks | Maximum Marks : 100 | Minimum passing Marks : 40 |

Part-B: content of the course

Total No. of Teaching-1 earning Periods (01 Hr. per period)- 60 periods (60 Hours

| Unit | Topics (course Contents) | No. of Periods |
|---|---|---|
| I | लोक साहित्य परिभाषा और स्वरूप : लोक संस्कृति और साहित्य<br>साहित्य और लोक का अंतर्संबंध, लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएं | 15 |
| II | छत्तीगढ़ के लोकगीत और लोकगाथा : लोकगीत और लोकगाथा की अवधारणा व स्वरूप<br>लोकगीत–करमा, ददरिया, संस्कारगीत,पर्वगीत व अन्य<br>लोकगाथा–पंडवानी ,भरथरी व अन्य | 15 |
| III | छत्तीसगढ़ के लोकनृत्य : लोकनृत्य की अवधारणा व स्वरूप<br>सुआ, पंथी, करमा, ददरिया व राउत नाचा व अन्य लोकनृत्य<br>प्रमुख कलाकार | 15 |
| IV | छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य : लोकनाट्य की अवधारणा व स्वरूप<br>नाचा, गम्मत तथा अन्य लोकनाट्य, प्रमुख लोकनाट्यकार | 15 |

**संदर्भ ग्रंथः**


1. छत्तीसगढ़ का इतिहास– गीतेश कुमार अमरोहित
2. लेक संस्कृति और लोक इतिहास–बद्रीनाथ
3. लोकसाहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य– सं. रमेश टण्डन
4. छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन–नंदकिशोर तिवारी
5. छत्तीसगढ़ की लोकथाएं–परदेशीराम वर्मा


**अध्ययन मंडल के संयोजक एवं सदस्यों के हस्ताक्षर :**